उपलब्धि परीक्षण निर्माण के सिद्धान्त ?

Principles of Achievement test Construction

परीक्षण निर्माण के सिद्धान्त ! – General Principle of Test Construction)

परीक्षण निर्माण के मुख्य सिद्धान्त निम्न हैं —

(1) किसी भी प्रकार के परीक्षण से विषय विशेष के सभी उद्देश्यों की परीक्षा नहीं की जा सकती है।

(2) – परीक्षा का प्रारूप अत्यन्त व्यापक (Comprehensive) होना चाहिए।

(3) द्वि-अर्थी एवं भ्रामक प्रश्नों को परीक्षा में स्थान नहीं देना चाहिए।

(4) परीक्षा का उचित नामकरण करना चाहिए।

(5) प्रश्नों की भाषा सरल, सुबोध, संक्षिप्त एवं स्पष्ट होनी चाहिए।

(6) प्रत्येक प्रश्न स्वतंत्र होना चाहिए। प्रश्न में प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास नहीं करना चाहिए। ऐसी स्थिति परीक्षार्थी को दुविधा में डाल सकती है।

(7) परीक्षा सम्बन्धी विशिष्ट उदाहरण सहित दिया जाना चाहिए।

(8) परीक्षार्थियों को उत्तर लिखने के लिए पर्याप्त स्थान दिया जाना चाहिए।

(9) परीक्षा सम्बन्धी सामान्य निर्देश प्रारम्भ में ही दिए जाने चाहिए।

(10) ऐसे प्रश्न बनाये जायें जिनसे छात्रों के ज्ञान की व्यवहारिक योग्यता का मूल्यांकन किया जा सके।

Scanned with CamScanner

5/ उपलब्धि परीक्षण निर्माण के सोपान

उपलब्धि परीक्षण निर्माण के सोपान या स्तर निम्नलिखित है

(a) परीक्षण की योजना बनाना (Planning)
(b) तैयारी (Preparation)
(c) परीक्षण का आरंभ प्रारूप (Final Try out)
(d) परीक्षण का मूल्यांकन (Evaluation)

(a) परीक्षण की योजना बनाना (Planning) ⇒

जिस प्रकार जीवन में किसी कार्य को करने से पूर्व उसकी एक सुनिश्चित योजना बनानी पड़ती है। उसी प्रकार परीक्षण निर्माण (Test construction) की वास्तविक प्रक्रिया से पूर्व भी एक निश्चित योजना की आवश्यकता होती है अर्थात परीक्षण निर्माण का सर्वप्रथम कार्य परीक्षण योजना की रूपरेखा प्रस्तुत करना है। इस स्तर (Stage) पर निम्न कार्य करने पड़ते है

1. Review of existing test
2. Reading other test material or literature
3. Defining the trait.
4. The kind of Test (Achievement or Diagnostic)
5. Types of items
6. Time
7. ...

10 Method of Preparing the test

(b) तैयारी (Preparation) — परीक्षण की निश्चित एवं व्यवस्थित योजना बनाने के पश्चात ही परीक्षण निर्माता परीक्षण के प्रारम्भिक रूप की तैयारी करने लगता है सर्वप्रथम एवं विषय वस्तु के अनुसार वह विभिन्न पदों (items) का अन्य स्त्रोतों से चयन एवं स्वयं निर्माण करता है वह पदों को अपने अनुभवों के आधार पर उपलब्ध मानकों (Standards) निर्मित परीक्षणों में से छाटकर अथवा अन्य स्त्रोतों से रचना कर एकत्रित कर लेता है जो कि परीक्षण की विषय वस्तु का प्रतिनिधित्व कर सके। परीक्षण में जितने प्रकार के पदों की आवश्यकता होती है उन्हें इस प्रारम्भिक रूप में ही निर्मित कर लिया जाता है परीक्षण के पदों को एकत्रित करने तथा उनके पद एवं को निश्चित करने के पश्चात परीक्षण निर्माता के लिए आवश्यक हो है

Scanned with CamScanner

परीक्षण के पदों का संशोधित करने तथा उनके पद स्वरूप का निर्धारित करने के पश्चात परीक्षण निर्माता के लिये आवश्यक हो है।

(C) परीक्षण का अन्तिम प्रारूप (Final Try out)

परीक्षण की योजना बनाने का प्रारम्भिक रूप की रचना के बाद यह जानने का प्रयास होता है कि परीक्षण कितना, शुद्ध, वैध, विश्वसनीय परीक्षण की वास्तविक रचना से पूर्व उसके प्रारम्भिक रूप की जाँच करना चाहिये। इस प्रारम्भिक जाँच को Pilot Study कहते हैं। इसके निम्न उद्देश्य होते हैं —

(1) इस जाँच के द्वारा कमजोर एवं बेकार के पदों को परीक्षण से निकाल दिया जाता है।

(2) परीक्षण के अन्तिम रूप में पदों की वास्तविक संख्या निर्धारित करना।

(3) परीक्षार्थी एवं परीक्षक के उत्तरों के रूचि को स्पष्ट करना।

(4) विभिन्न पदों के मध्य अन्तर सम्बन्ध Inter Item correlation

(5) समस्त पदों को उप-भागों में व्यवस्थित करना।

(6) अन्तिम रूप की वास्तविक समय सीमा ज्ञात करना।

(7) अंकन विधि का निश्चय करना।

प्रस्तुत सोपान के अन्तर्गत परीक्षण की जाँच दो भागों में की जाती है प्रथम जाँच कहलाती है। तथा दूसरी जाँच (Actual Try out) कहलाती है।

(1) प्रथम जाँच (Pre Try-out) – प्रारम्भिक जाँच के लिए परीक्षण का प्रशासन जनसंख्या (Total Population) के 15 – या २० लोगों पर इस उद्देश्य से किया जाता है उसकी मुख्य कमियों को पाकर दूर किया जा सके।

(2) द्वितीय जाँच (Actual Try out) ⇒

परीक्षण की वास्तविक जाँच के अन्तर्गत या Items Analysis) की तकनीकी प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है यह विश्लेषण एक महत्वपूर्ण सोपान है। इसके बिना कोई भी परीक्षण पूर्ण नहीं होता है। पद विश्लेषण वह प्रक्रिया है माध्यम से परीक्षण निर्माता यह निश्चित करता है कि उसे परीक्षण के किन पदों सम्मिलित करना और किन पदों को छोड़ना है अर्थात इस प्रक्रिया के मुख्य उद्देश्य निम्न है

(A) TO Select good items to be include in the final test

(b) To reject the invalid or less valid items.

चूंकि परीक्षण निर्माता अपने परीक्षण में उन्हीं प्रश्नों को सम्मिलित करना चाहता है जो उद्देश्य प्राप्ति में सहायक होते हों इस दृष्टि से परीक्षण को अधिक प्रभावशाली बनाने के परीक्षण निर्माता का उसमें सम्मिलित किये जाने वाले पदों का अलग-2 मूल्यांकन करना भी / विश्लेषण करना है। इस प्रक्रिया की कसौटी (criteria) के रूप में गये प्रश्नों की विभेदीकरण क्षमता (Item Validity Index or VI) तथा प्रश्नों का कठिनाई स्तर Item Difficulti Index (DI) की गणना करनी होती है। तथा केवल उन्हीं पदों का चयन किया जाता है जो इन दोनों कसौटियों पर सही उतरते हैं—

(d) परीक्षण का मूल्यांकन (Evaluation) ⟹ परीक्षण का मूल्यांकन निम्न दो बातों को ध्यान में रखकर किया जाता है।

① परीक्षा कितनी वैध, विश्वसनीयता, विभेदकारी या वस्तुनिष्ठ वस्तुनिष्ठ अर्थात परीक्षण में मापक यंत्र की विशेषताएं किस सीमा तक उपस्थित हैं।

② परीक्षा देने वालों के उत्तरों का स्वरूप कैसा है। विद्यालयों में विषय का शिक्षण किस प्रकार चल रहा है। उत्तम प्रकार के परीक्षण ही यह सूचनाएं विश्वस्त रूप से दे सकते हैं।

अतः परीक्षण का मूल्यांकन उत्तम मापक की भावी कसौटियों को ध्यान में रखकर ही किया जाये।